छान्दोग्योपणिषत्

chāndogya *n* – книга, учение cando-ga;
chando-ga - «поющий метрический гимн», жрец-udgātar, исполнитель гимнов Самаведы;

अथ सप्तमोऽध्यायः

adhyāya *m* - чтение, изучение (особ. священных текстов); время занятий, урок; глава, раздел;

1

अधीहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं नारदस्

adhī (adhi-i) II Ā. - учиться; изучать; читать; знать; *p.p.* изученный, начитанный, ученый; *caus.* учить;
bhagavant – счастливый, благодатный, благословенный, блаженный, прекрасный; эпитет богов (*букв.* «обладающий долей»); bhagavas – Voc.sg. (*варианты* bhagavan, bhagavas, bhagos);
upasad I P. - подсаживаться, сидеть рядом с (+*Acc.*), подходить, почитать;
sanat-kumāra *nom.pr.*– старший сын Брахмана;
nārada *nom.pr.* – божественный мудрец, автор гимнов Ригведы;

तँ होवाच यद्वेत्थ तेन मोपसीद ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति स होवाच १

ūrdhva - высокий, направленный вверх; *acc. adv.* вверх, впредь, после;

ऋग्वेदं भगवो ऽध्येमि यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं

ātharvaṇa – имеющий отношение к жрецу-атхарвану; *m* – Атхарваведа;
itihāsa *m* – жанр исторических преданий (*букв.* «так было», iti-ha-āsa), рассказ, легенда, эпическая поэма, история;
purāṇa - старый, древний;; *n* собрание легенд и преданий («сказание о древности»);

वेदानां वेदं पित्र्यँ राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं

pitrya – отцовский, наследственный, родовой; *m* – ритуал почитания предков;
rāśi *m* – большое количество; толпа, стая;
daiva – божественный; рок, судьба;
nidhi *m* – сокровище, клад, хранилище; хронология
vākovākya (vākas-vākya) *n* – диалог, разговор
ekāyana *n* – манера поведения, житейская мудрость; единство; узкая тропинка;

देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवो ऽध्येमि २

sarpa-deva-jana-vidyā *f* – наука о змеях, богах и демонах;

सो ऽहं भगवो मन्त्रविदेवास्मि नात्मविच्छ्रुतँ ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यस्तरति शोकमात्मविदिति

mantra *m, n pl.* - мантры (*назв. священных стихов ведических гимнов*); заклинание, священное изречение, священный текст; совет; наставление;
ātman *m* - душа; собственное «я»; *как местоимение* — сам, себя, собственный; тело, ум; *филос.* атман, высший дух, мировая душа, сущность (высший жизненный принцип);
tar I P. - переправляться через; пересекать; спасаться; *caus.* переправлять, спасать;
śoka *m* - печаль, горе, скорбь;

सो ऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य पारं तारयत्विति

śuc (I P. śocati) заботиться, печалиться, жалеть, скорбеть;
pāra – переправляющий; *m, n* – противоположный берег, граница;

तँ होवाच यद्वै किंचैतदध्यगीष्ठा नामैवैतत् ३

adhigā II P. – вспоминать, помнить, изучать, учить;

नाम वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेद आथर्वणश्चतुर्थ इतिहासपुराणः पञ्चमो

वेदानां वेदः पित्र्यो राशिर्दैवो निधिर्वाकोवाक्यमेकायनं

देवविद्या ब्रह्मविद्या भूतविद्या क्षत्रविद्या नक्षत्रविद्या सर्पदेवजनविद्या नामैवैतन्नामोपास्स्वेति ४

upās II Ā. - почитать, служить, оказывать честь; сидеть;

स यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

yāvant - сколь большой, как, сколький; *yavat adv.* между тем как, пока, когда, как;

यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो नाम्नो भूय इति

bhūyaṃs *n* (*adv.* -yas) *cpv.* больший; *adv.* больше, большей частью, очень, снова, далее;

नाम्नो वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति ५

vāva – *adv.* – в самом деле, именно, как раз;

इति सप्तमाध्याये प्रथमः खण्डः १

khaṇḍa *m, n* кусок; группа, глава, раздел.

2

वाग्वाव नाम्नो भूयसी वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं

vijñā - понимать, узнавать, знать, говорить, обращаться (*со словами*), спрашивать, различать;

वेदानां वेदं पित्र्यँ राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं

देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यां

दिवं च पृथिवीं च वायुं चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयाँसि च

ākāśa *m* - пространство; небо;
tejas *n* - огонь, жар, зной; блеск, красота, величие, достоинство;

तृणवनस्पतीञ्छ्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं

vanaspati *f* – дерево, растение, ствол
śvāpada *m, n* – зверь, хищное животное;
kīṭa *m* – червь, насекомое;
pataṅga – летающий; *m* крылатое насекомое (бабочка); птица;
pipīlaka *m* – муравей;

धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च

hṛdaya-jña – знающий ч.-л. сущность;

यद्वै वाङ्नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयिष्यन्न सत्यं नानृतं न साधु नासाधु न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञो

वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्स्वेति १

स यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो वाचो भूय इति

वाचो वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये द्वितीयः खण्डः २

3

मनो वाव वाचो भूयो यथा वै द्वे वामलके द्वे वा कोले द्वौ वाक्षौ मुष्टिरनुभवत्यू

āmalaka, kola, akṣa – виды деревьев и их плоды;
muṣṭi *m, f* – кулак, горсть ч.л-.;
anubhū I P. – быть, помогать, достигать, покорять, воспринимать, терпеть;

एवं वाचं च नाम च मनो ऽनुभवति

स यदा मनसा मनस्यति मन्त्रानधीयीयेत्यथाधीते कर्माणि कुर्वीयेत्यथ कुरुते

पुत्राँश्च पशूँश्चेच्छेयेत्यथेच्छत इमं च लोकममुं चेच्छेयेत्यथेच्छते

मनो ह्यात्मा मनो हि लोको मनो हि ब्रह्म मन उपास्स्वेति १

स यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो मनसो भूय इति

मनसो वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये तृतीयः खण्डः ३

4

संकल्पो वाव मनसो भूयान्यदा वै संकल्पयते ऽथ मनस्यत्यथ वाचमीरयति तामु नाम्नीरयति

saṃkalpa *n* – решение, решительность; воля, желание, требование;
saṃkalp I Ā.- возникать, желать, стремиться; *caus.* – составлять, образовывать; стремиться, замышлять ч.л.; определять, указывать, решать;
īr II Ā.- двигаться, подниматься;, возникать, раздаваться, звучать;

नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि १

तानि ह वा एतानि संकल्पैकायनानि संकल्पात्मकानि संकल्पे प्रतिष्ठितानि

ātmaka - состоящий из, имеющий природу, кому свойственно;
pratiṣṭhita – находящийся в +Loc.; основывающийся на +Loc.; обоснованный; стойкий, твердый;

समक्लृपतां द्यावापृथिवी समकल्पेतां वायुश्चाकाशं च समकल्पन्तापश्च तेजश्च

तेषाँ संक्लृप्त्यै वर्षं संकल्पते वर्षस्य संक्लृप्त्या अन्नँ संकल्पते ऽन्नस्य संक्लृप्त्यै प्राणाः संकल्पन्ते

saṃkḷpti *f* – воля, желание, размышление, прихоть; изобретение;

प्राणानाँ संक्लृप्त्यै मन्त्राः संकल्पन्ते मन्त्राणाँ संक्लृप्त्यै कर्माणिसंकल्पन्ते

कर्मणाँ संक्लृप्त्यै लोकः संकल्पते लोकस्य संक्लृप्त्यै सर्वं संकल्पते

स एष संकल्पः संकल्पमुपास्स्वेति २

स यः संकल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते क्लृप्तान्वै स लोकान्

kalp (I Ā. p.p. kḷpta) служить для ч.-л., годиться, достигать цели; быть пригодным, соответствовать; процветать, преуспевать;
kḷpta – готовый, правильный, совершенный, устроенный; созданный, сделанный, определенный;

ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितो ऽव्यथमानानव्यथमानो ऽभिसिध्यति

abhisidh IV P.– быть завершенным, приобретать, побеждать;
dhruva - продолжительный, постоянный, твердый; *acc.adv.* положительно, несомненно
vyath (I Ā. vyathate) колебаться, сбиваться;

यावत्संकल्पस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यः संकल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवः संकल्पाद्भूय इति

संकल्पाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति ३

इति सप्तमाध्याये चतुर्थः खण्डः ४

5

चित्तं वाव संकल्पाद्भूयो

citta – мысленный, упомянутый, желанный; *n* ум, разум; мышление, сознание; чувство, ощущение; воля, желание;

यदा वै चेतयते ऽथ संकल्पयते ऽथ मनस्यत्यथ वाचमीरयति तामु नाम्नीरयति

cetaya (caus. *om* cit) – делать внимательным, напоминать, учить, давать понять, осознавать;
saṃkalpaya (caus. *om* saṃkalp) – составлять, образовывать; стремиться, желать; решать;

नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि १

तानि ह वा एतानि चित्तैकायनानि चित्तात्मानि चित्ते प्रतिष्ठितानि

तस्माद्यद्यपि बहुविदचित्तो भवति

नायमस्तीत्येवैनमाहुर्यदयं वेद यद्वा अयं विद्वान्नेत्थमचित्तः स्यादित्य्

अथ यद्यल्पविच्चित्तवान्भवति तस्मा एवोत शुश्रूषन्ते

alpa – маленький, ограниченный, краткий;

चित्तँ ह्येवैषामेकायनं चित्तमात्मा चित्तं प्रतिष्ठा चित्तमुपास्स्वेति २

स यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते चित्तान्वै स लोकान्

ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितो ऽव्यथमानानव्यथमानो ऽभिसिद्ध्यति

यावच्चित्तस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवश्चित्ताद्भूय इति

चित्ताद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति ३

इति सप्तमाध्याये पञ्चमः खण्डः ५

6

ध्यानं वाव चित्ताद्भूयो

dhyāna *n* – размышление, религиозное созерцание;

ध्यायतीव पृथिवी ध्यायतीवान्तरिक्षं ध्यायतीव द्यौर्ध्यायन्तीवापो ध्यायन्तीव पर्वता ध्यायन्तीव देवमनुष्यास्

dhyā IV P. – размышлять, созерцать; думать, представлять себе;

तस्माद्य इह मनुष्याणां महत्तां प्राप्नुवन्ति ध्यानापादाँशा इवैव ते भवन्त्य्

mahattā *f* – величие; верховная власть, господство;
āpāda *m* – награда, вознаграждение;
aṃśa *m* часть, доля; наследство;

अथ ये ऽल्पाः कलहिनः पिशुना उपवादिनस्ते

kalahin – сварливый, вздорный, любящий ссоры;
piśuna – злословящий, клевещущий; *m* – клеветник, сплетник, доносчик;
upavādin – порицающий, осуждающий, говорящий плохо о к.-л.;

ऽथ ये प्रभवो ध्यानापादाँशा इवैव ते भवन्ति ध्यानमुपास्स्वेति १

prabhu - могущественный, способный; *m* господин, повелитель, царь;

स यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो ध्यानाद्भूय इति

ध्यानाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये षष्ठः खण्डः ६

7

विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयो

vijñāna *n* - сознание, познание, мудрость, способность познавать;

विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं

वेदानां वेदां पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं

देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यां

दिवं च पृथिवीं च वायुं चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयाँसि च

तृणवनस्पतीञ्छ्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं

धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च

अन्नं च रसं चेमं च लोकममुं च विज्ञानेनैव विजानाति विज्ञानमुपास्स्वेति १

rasa - *m* сок; сердцевина; питье, вода; суть; поэтическое переживание, раса; религиозное чувство

स यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञानवतो वै स लोकाञ्ज्ञानवतो ऽभिसिध्यति

यावद्विज्ञानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो विज्ञानाद्भूय इति

विज्ञानाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये सप्तमः खण्डः ७

8

बलं वाव विज्ञानाद्भूयो ऽपि ह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते

vijñānavant – умный, мудрый;
ākamp Ā. I – дрожать;

स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवत्युत्तिष्ठन्परिचरिता भवति परिचरन्नुपसत्ता भवत्यु

utthā (ud-sthā) I U. - вставать; восходить, подниматься;

paricar I P. – бродить, странствовать; ухаживать;
upasad I P. – подсаживаться, подходить, почитать;

उपसीदन्द्रष्टा भवति श्रोता भवति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता भवति

budh I U. - будить, пробуждать, просыпаться; учить, изучать; знать, замечать, узнавать;
boddhar – знаток, исследователь ч.-л.;

बलेन वै पृथिवी तिष्ठति बलेनान्तरिक्षं बलेन द्यौर्बलेन पर्वता

बलेन देवमनुष्या बलेन पशवश्च बयाँसि च तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं

बलेन लोकस्तिष्ठति बलमुपास्स्वेति १

स यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो बलं ब्रह्मेत्यपास्ते ऽस्ति भगवो बलाद्भूय इति

बलाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये ऽष्टमः खण्डः ८

9

अन्नं वाव बलाद्भूयस्

तस्माद्यद्यपि दशरात्रीर्नाश्नीयाद्यद्यु ह जीवेदथवाद्रष्टाश्रोतामन्ताबोद्धाकर्ताविज्ञाता भवत्य्

aś IX P. - есть, кушать;
athavā - или же, или, же, напротив;

अथान्नस्यायै द्रष्टा भवति श्रोता भवति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता भवत्यन्नमुपास्स्वेति १

āyā II P. – приходить; (*здесь отгл.существительное с непр. окончанием)*;

स यो ऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽन्नवतो वै स लोकान्पानवतो ऽभिसिध्यति

pāna *n* – питье, напиток;

यावदन्नस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो ऽन्नं ब्रह्मेत्यपास्ते ऽस्ति भगवो ऽन्नाद्भूय इत्य्

अन्नाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये नवमः खण्डः ९

10

आपो वावान्नाद्भूयस्

यस्तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति व्याधीयन्ते प्राणा अन्नं कनीयो भविष्यतीत्य्

vṛṣṭi *f* – дождь;
vyādhā - быть не в порядке, плохо себя чувствовать, быть нездоровым;
prāṇa *m* дыхание, дух; лицо; *pl*. жизнь (здесь в значении prāṇin – живое существо);

अथ यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः प्राणा भवन्त्यन्नं बहु भविष्यतीत्य्

ānandin – радостный, счастливый;

आप एवेमा मूर्ता येयं पृथिवी यदन्तरिक्षं यद् द्यौर्यत्पर्वता यद्देवमनुष्या यत्पशवश्च वयाँसि च

mūrta *n* – материальная форма, воплощенная сущность;

तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकमाप एवेमा मूर्ता अप उपास्स्वेति १

स यो ऽपो ब्रह्मेत्युपास्त आप्नोति सर्वान्कामाँस्तृप्तिमान्भवति

tṛptimant – довольный, удовлетворенный, насыщенный;

यावदपां गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यो ऽपो ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवो ऽद्भ्यो भूय इत्यू

अद्भ्यो वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये दशमः खण्डः १०

11

तेजो वावाद्भ्यो भूयस्तद्वा एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति

tejas *n* - острота, огонь, жар, зной; блеск, красота, величие, достоинство;
āgrah IX P. – держать, удерживать;
abhitap I P. – нагревать, мучить;

तदाहुर्निशोचति नितपति वर्षिष्यति वा इति तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाथापः सृजते

niśuc I P. – быть горячим, обжигать;
nitap I P. – излучать жар, уничтожать огнем;
varṣ I P.– идти (о дожде); осыпать дарами;
sarj VI P. - давать, дарить; выпускать, приносить (*цветы, плоды — о растении, дереве*); творить

तदेतदूर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विद्युद्भिराह्रादाश्चरन्ति

ūrdhva высокий, направленный вверх; *acc. adv.* вверх
tiryañc (*f* tiraścī, *n* tiryak) идущий в сторону, поперек; *m, n* зверь, животное
vidyut сияющий; *n* свет, свечение; *f* молния;
hrāda *m* – шум, звук, грохот; (hrād – звучать, грохотать, производить шум, = āhrād?)

तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति

vidyut I Ā. – сверкать, сиять, вспыхивать (о молнии);
stanaya (*caus. om* stan) – греметь;

तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाथापः सृजते तेज उपास्स्वेति १

स यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते तेजस्वी वै स तेजस्वतो लोकान्भास्वतो ऽपहततमस्कानभिसिद्ध्यति

tejasvin, tejasvant – сверкающий, блестящий, горячий;
bhāsvant – светящийся;
apahata (p.p. *om* apahan) – убитый, разрушенный, уничтоженный;

यावत्तेजसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवस्तेजसो भूय इति

तेजसो वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याय एकादशः खण्डः ११

12

आकाशो वाव तेजसो भूयानाकाशे वै सूर्याचन्द्रमसावुभौ विद्युन्नक्षत्राण्यग्निर्

ākāśa *m* - пространство; небо;

आकाशेनाह्वयत्याकाशेन शृणोत्याकाशेन प्रतिशृणोत्याकाशे रमत आकाशे न रमत

pratiśru V U. – прислушиваться, отвечать, обещать;

आकाशे जायत आकाशमभिजायत आकाशमुपास्स्वेति १

abhijan IV Ā. – рождаться, перерождаться, становиться;

स य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्त आकाशवतो वै स लोकान्प्रकाशवतो ऽसंबाधानुरुगायवतो ऽभिसिद्ध्यति

asaṃbādha – нестесненный, неограниченный;
urugāya – далекий, широкий; *n* свободное пространство;

यावदाकाशस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगव आकाशाद्भूय इत्य्

आकाशाद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये द्वादशः खण्डः १२

13

स्मरो वावाकाशाद्भूयस्

smara *m* – память, воспоминание; стремление, любовь;

तस्माद्यद्यपि बहव आसीरन्नस्मरन्तो नैव ते कंचन शृणुयुर्न मन्वीरन्न विजानीरन्

यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुरथ मन्वीरन्नथ विजानीरन्

स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति स्मरेण पशून्स्मरमुपास्स्वेति १

स यः स्मरं ब्रह्मत्युपास्ते यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगवः स्मराद्भूय इति

स्मराद्वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये त्रयोदशः खण्डः १३

14

आशा वाव स्मराद्भूयस्य्

āśā *f* - желание, надежда;

आशेद्धो वै स्मरो मन्त्रानधीते कर्माणि कुरुते पुत्राँश्च पशूँश्चेच्छत

idh Ā II - гореть, светить, сиять;

इमं च लोकममुं चेच्छत आशामुपास्स्वेति १

स य आशां ब्रह्मेत्युपास्त आशयास्य सर्वे कामाः समृद्ध्यन्त्यमोघा हास्याशिषो भवन्ति

samṛdh P IV - иметь успех, достигать цели, пруспевать;

mogha - напрасный, бесполезный;
āśis *f* - благословение, молитва;

यावदाशाया गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति

य आशां ब्रह्मेत्युपास्ते ऽस्ति भगव आशाया भूय इत्य्

आशाया वाव भूयो ऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति २

इति सप्तमाध्याये चतुर्दशः खण्डः १४

15

प्राणो वाव आशाया भूयान्

prāṇa *m* - дыхание, дух; энергия, жизнеспособность; *pl*. жизнь;

यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन् प्राणे सर्वं समर्पितं

āra *n* - спица (колеса);
nābhi *f, m* - пупок, центр, углубление;
samarpaya (*caus. om* samar) - бросать, направлять, ударять; устанавливать, укреплять;

प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति

प्राणो ह पिता प्राणो माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः १

स यदि पितरं वा मातरं वा भ्रातरं वा स्वसारं वाचार्यं वा ब्राह्मणं वा किंचिद् भृशमिव प्रत्याह

bhṛśa - сильный, резкий; *acc. adv.* сильно, резко; много, очень;

धित्त्वास्त्वित्येवैनमाहुः पितृहा वै त्वमसि मातृहा वै त्वमसि भ्रातृहा वै त्वमसि

-han - убивающий, убийца;

स्वसृहा वै त्वमस्याचार्यहा वै त्वमसि ब्राह्मणहा वै त्वमसीति २

अथ यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणाञ्छूलेन समासं व्यतिषंदहेन्

utkram I, IV U. - уходить, избегать;
śūla *m, n* - копье, пика, кол, вертел, трезубец;
samāsa *m* - соединение, сочетание, собирание;
vyatiṣaṃdah I P. - сжечь полностью, дотла;

नैवैनं ब्रूयुः पितृहासीति न मातृहासीति न भ्रातृहासीति

न स्वसृहासीति नाचार्यहासीति न ब्राह्मणहासीति ३

प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति

स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नतिवादी भवति

ativad I P. - говорить громче или лучше;

तं चेद्ब्रूयुरतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति ब्रूयान्नापह्नुवीत ४

ced - если, и , также, когда;
apahnu I Ā. - отказываться, отрицать; скрывать;

इति सप्तमाध्याये पञ्चदशः खण्डः १५

16

एष तु वा अतिवदति यः सत्येनातिवदति सो ऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति

सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सत्यं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याये षोदशः खण्डः १६

17

यदा वै विजानात्यथ सत्यं वदति

नाविजानन्सत्यं वदति विजानन्नेव सत्यं वदति

विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति विज्ञानं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याये सप्तदशः खण्डः १७

18

यदा वै मनुते ऽथ विजानाति नामत्वा विजानाति मत्वैव विजानाति

मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति मतिं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याये ऽष्टादशः खण्डः १८

19

यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते नाश्रद्दधन्मनुते श्रद्दधदेव मनुते

śraddhā (śrad-dhā III, P.) - иметь веру, верить;

श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्येति श्रद्धां भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याय एकोनविंशः खण्डः १९

20

यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्दधाति नानिस्तिष्ठञ्छ्रद्दधाति निस्तिष्ठन्नेव श्रद्दधाति

niḥṣṭhā I U. - вырастать, подниматься; осуществлять, заканчивать, приготовлять;

निष्ठा त्वेव विजिज्ञासियव्येति निष्ठां भगवो विजिज्ञास इति १

niṣṭhā *f* - позиция, точка зрения; обязанность; стойкость, уравновешенность, самообладание; знание, осведомленность; исполнение, завершение;

इति सप्तमाध्याये विंशः खण्डः २०

21

यदा वै करोत्यथ निस्तिष्ठति नाकृत्वा निस्तिष्ठति कृत्वैव निस्तिष्ठति

कृतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति कृतिं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याय एकविंशः खण्डः २१

22

यदा वै सुखं लभते ऽथ करोति नासुखं लब्ध्वा करोति सुखमेव लब्धवा करोति

सुखं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सुखं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याय द्वाविंशः खण्डः २२

23

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं

bhūman *m* - изобилие, богатство; множество. *(Согласно комментарию Шанкары - "великое, безграничное")*

alpa - маленький, *adv. acc.* немного;

भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञास इति १

इति सप्तमाध्याय त्रयोविंशः खण्डः २३

24

यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा

अथ यत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पं

यो वै भूमा तदमृतमथ यदल्पं तन्मर्त्यं स

भगवः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नीति १

pratiṣṭhā I U. - стоять, находиться; возвышаться; основываться, противостоять;

mahiman *m* - величие; благородство;

yadi vā - yadi vā - или... или;

गोअश्वमिह महिमेत्याचक्षते हस्तिहिरण्यं दासभार्यं क्षेत्राण्यायतनानीति

ācakṣ II Ā. - рассказывать, называть;

āyatana *n* местопребывание, дом, храм;

नाहमेवं ब्रवीमि ब्रवीमीति होवाचान्यो ह्यन्यस्मिन्प्रतिष्ठित इति २

इति सप्तमाध्याय चतुर्विंशः खण्डः २४

25

स एवाधस्तात्स उपरिष्टात्स पश्चात्स पुरस्तात्स दक्षिणतः स उत्तरतः स एवेदँ सर्वमित्यू

अथातो ऽहङ्कारादेश एवाहमेवाधस्तादहमुपरिष्टादहं पश्चादहं पुरस्ताद्

ahaṅkāra *m* - чувство собственного достоинства, самоуважение; самолюбование, эгоизм; самосознание;

ādeśa *m* приказ; предписание; совет;

athātas *adv.* - теперь, сейчас;

अहं दक्षिणतो ऽहमुत्तरतो ऽहमेवेदँ सर्वमिति १

अथात आत्मादेश एवात्मैवाधस्तादात्मोपरिष्टाद्

आत्मा पश्चादात्मा पुरस्तादात्मा दक्षिणत आत्मोत्तरत आत्मैवेदँ सर्वमिति

स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः

rati *f* - удовольствие, наслаждение;

krīḍā *f* - игра, удовольствие;

ānanda *m, n* - радость, удовольствие, наслаждение;

स स्वराड् भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति

svarāj *m* - Самодержец (*эпитет многих богов*);

अथ ये ऽन्यथातो विदुरन्यराजनस्ते क्षय्यलोका भवन्ति

तेषाँ सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति २

इति सप्तमाध्याय पञ्चविंशः खण्डः २५

26

तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत

आत्मतः प्राण आत्मत आशात्मतः स्मर आत्मत आकाश

आत्मतस्तेज आत्मत आप आत्मत आविर्भावतिरोभावाव्

āvirbhāva *m* - появление, проявление;
tirobhāva *m* - устранение, вытеснение, исчезновение;

आत्मतो ऽन्नमात्मतो बलमात्मतो विज्ञानमात्मतो ध्यानमात्मतश्चित्तम्

आत्मतः संकल्प आत्मतो मन आत्मतो वागात्मतो नाम

आत्मतो मन्त्रा आत्मतः कर्माण्यात्मत एवेदँ सर्वमिति १

तदेष श्लोको

न पश्यो मृत्युं पश्यति न रागं नोत दुःखताँ

paśya - видящий, понимающий;
rāga *m* - цвет, красный цвет; прелесть; любовь, страсть; мелодия;

सर्वं ह पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति सर्वश इति

स एकधा भवति त्रिधा भवति पञ्चधा

सप्तधा नवधा चैव पुनश्चैकादशः स्मृतः

शतं च दश चैकश्च सहस्राणि च विँशतिर्

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षस्

śuddhi *f* - очищение, исправление; истинное знание;
lambha *m* - приобретение, отыскивание, возвращение (*утраченного*);
granthi *m* - узел;

तस्मै मृदितकषायाय तमसस्पारं दर्शयति भगवान् सनत्कुमारस्

mṛdita - удаленный, разрушенный; выдавленный, разбитый;
kaṣāya *m* - краснота, страсть; грязь; тупость, изъян;
pāra - переправляющий; *m, n* - противоположный берег, граница, конец;

तँ स्कन्द इत्याचक्षते तँ स्कन्द इत्याचक्षते २

skanda - *имя собств.*;

इति सप्तमाध्याय षड्विंशः खण्डः २६

इति सप्तमो ऽध्यायः ७